IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, August 2025
Impact Factor: 7.67

तुलसी साहित्य के सामाजिक संदर्भ एवं भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. कमल किशोर यादव

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरार, ग्वालियर

शोध सार–

भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में मध्यकालीन कवि गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य की चर्चा अग्रगण्य है उनका सम्पूर्ण साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा से सन्निद्ध साहित्य है उनके साहित्य में एक तरफ ज्ञान रूपी सरिता का प्रवाह है तो दूसरी ओर परम्परा का निर्वहन। उनके काव्य में भक्ति, समन्वय और मानवीय करूणा, हमें भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ती हुई आद्यांत प्रतीत हुई है। तुलसीदास ने जनसाधारण के सौन्दर्य–बोध की जैसी सुकुमार व्यंजना की है, वह हिन्दी साहित्य में अनुपम है। तुलसी की मानवीय सहानुभूति का आधार सामाजिक यथार्थ है। तत्कालीन समाज का जैसा भरा पूरा चित्र उनकी रचनाओं में मिलता है, वैसा उस समय के और किसी कवि की रचनाओं में नहीं मिलता। जनता की दरिद्रता, उसके क्लेशों का वर्णन उन्होंने बड़े ही यथार्थवादी ढंग से किया है। ''खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।'' बडी स्पष्टता से उन्होंने समाज में सामंतों के कुशासन का सवाल उठाया। राजा और प्रजा के संघर्ष में तुलसी प्रजा के साथ हैं। रामचरित् मानस में वह प्रजा को सताने वाले राजाओं के लिए कहते हैं–''जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। ते नृप अवसि नरक अधिकारी।'' दोहावली में भी वे उन राजाओं के पतन की भविष्यवाणी करते हैं जो प्रजा को सताते हैं: ''राज करत बिनु काज ही, करैं कुचालि कुसाज। तुलसी ते दसकंध ज्यों, जइहैं सहित समाज।'' तुलसी ने एक सुखी समाज की कल्पना की थी जिसमें दरिद्रता और विषमता मिट गयी हो। हम अपनी आखों से देख सकते हैं कि मनुष्य अपने प्रयत्न से ऐसा समाज रच सकता है। तुलसीदास का स्वप्न श्रमिक जनता के लिए धरोहर है जिससे प्रेरित होकर वह समाजवाद के लिए मंजिल–दर–मंजिल बढ़ती जायेगी। तुलसी का मानव प्रेम और उनके काव्य के निहितार्थ हमें हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा से जोडते है जो हम सबके लिए गर्व की बात है।

कुंजी शब्द– भारतीय ज्ञान परम्परा, मानव प्रेम, सामंतवात, समाज, समन्वय, विषमता, नैतिक मूल्य आदि।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-28626

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, August 2025
Impact Factor: 7.67

प्रस्तावना–

राम के प्रति तुलसी का सेवक भाव है दरिद्रता और सामाजिक उत्पीड़न के बीच तुलसी राम की तरफ हाथ उठते हैं, कितनी व्यथा के साथ वे कवितावली और विनय पत्रिका के अनेक पदों में देखा जा सकता है। ऐसी पीड़ा, ऐसा उत्कट आत्मनिवेदन हिन्दी साहित्य में और कहीं प्रकट नहीं हुआ तुलसीदास जानते थे– 'नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं। उन्होंने अनुभव किया था, आगि बड़वागि ते बड़ी है आगि पेट की। उन्होंने राम से प्रार्थना की थी कि दरिद्रता के रावण ने संसार को दबा रखा है, आकर रक्षा करो–दारिद दसानन दबाई दूनी दीनबन्धु दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी' इसीलिए वह इतना व्यथित होकर राम से कहते हैं, ''तुम जनि मन मैलो करो लेचन जानि फेरो।'' राम उनके लिए दारिद्र दोष दवानल हैं जो औरों के सामने जॉचना खत्म कर देते हैं। जब वह सामन्तों को गजशाला और पत्नीशाला से सुशोभित अपनी सम्पत्ति पर गर्व करते देखते हैं तो कहते हैं, ''ऐसे भये तो कहा तुलसी जुपै जानकीनाथ के रंग न राते।'' तुलसी के राम अपनी आशाओं के केन्द्र ही नहीं अपितु मनुष्य में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्रह्मरूप में भले ही वह निर्गुण निर्विकार हों, मानव–रूप में वह किसी देशकाल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही प्रतिबिम्ब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा का केन्द्र बिन्दु है। उनके चरित्र में पितृ–भक्ति, भातृप्रेम आदि पर बार–बार लिखा गया है लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निश्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं हैं उसका आधार व्यापक सामाजिक संदर्भ में है।

विषय विश्लेषण–

तुलसीदास का देवताओं को अपना काव्य विषय बनाने का अपना निहितार्थ है वह यह है कि सभी को एक किया जाये और समाज में समन्वय स्थापित हो। समाज समुन्नत बने। शैवों, शाक्तों और वैष्णवों को एक करने के लिए शिव को राम का प्रेमी, सीता का जगदम्बा का अवतार आदि कहते हैं। तुलसी की भक्ति भारतीय परम्परा का निर्वहन करती है वह मानववाद में डूबी हुई है इसलिए तुलसी ने प्राचीन महाकाव्यों की मानववादी परम्परा को आगे बढ़ाया है। ''न मानषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्'' पर रामचरित मानस मानो सजीव भाष्य है। अनेक बार तुलसी ने भक्त को भगवान से बड़ा बतलाया है। तुलसीदास न्याय का सक्रिय पक्ष लेते दिखते हैं तथा अधिक धैर्यवान आदि गुणों को अनेकबार प्रकट किया है लेकिन जहॉ आवश्यकता क्रोध की है तब उनका क्रोध भी प्रकट हुआ है अनायास नहीं परशुराम अपनी क्रोधसीमा पार कर जाते हैं तब उन्हें राम चेतावनी देते हुए समझाते हैं–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, August 2025 Impact Factor: 7.67

"देव मनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होइ बलवाना।
जौं रन हमहिं प्रचारै कोउ। लरहिं सुखेन काल किन होउ।।"

इसी तरह जब समुद्र राम को रास्ता नहीं देता, समझाने और विनती करने पर भी वह नहीं पसीजता तब तुलसी कहते हैं–

"विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीत।
बोले राम सकोप तब, भय बिन होय न प्रीति।"

इसी तरह रावण का अन्याय देखकर पहले दूत द्वारा राम उसे समझाने की कोशिश करते है, लेकिन वह नहीं मानता, तब उसका हृदय परिवर्तन करने के लिए वह सत्याग्रह नहीं करते, उससे युद्ध छेड़ देते हैं। राम का सारा चरित्र आत्मपीड़ा द्वारा निष्क्रिय प्रतिरोध का खण्डन करता है। कहना न, होगा, यह बहुत ही महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है जो हमें हमारे ज्ञान और परम्परा से जोड़ता है। तुलसी के साहित्य में ऐसे तमाम स्थलों पर इन मूल्यों की चर्चा देखने को मिलती है। हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा इन्हीं नैतिक मूल्यों को अपने अन्दर आत्मशात किये हुए है जो एक तरफ ज्ञान के आलोक से प्रकाशित कर रही है दूसरे तरफ परम्परा और मूल्यों से जोड़कर हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है। तुलसीदास एक ऐसे समाज का निमार्ण चाहते हैं जो उसके लिए कहते हैं–

"नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।"

उनकी कविता अलंकारशास्त्र के उदारण पेश करने के लिए नहीं रची गयी वह तो प्रेम और आनंद की नदी के समान वह चलती है तुलसी की कविता तो मानो–

"हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना।
जो बरखै बर बारि बिचारू। होंहि कवित मुक्ता मनि चारू।।"

निष्कर्ष–

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि तुलसी साहित्य के सामाजिक संदर्भ भारतीय ज्ञान परम्परा को अपने आप में आत्मसात किए हुए है एक ओर उनका साहित्य आत्म निवेदन और विनय का साहित्य है जो हमारे परम्परागत मूल्यों से हमें जोड़ता है तो दूसरी ओर वह प्रतिरोध का साहित्य भी है जो हमारे ज्ञान चच्छुओं को खोलता है। हमारे समाज पर उनका इतना गहरा प्रभाव है कि आज यह कल्पना करना कठिन है उन्होंने अनेक ऐसी मान्यताओं को अस्वीकार करके यह साहित्य रचा था वे राम के सम्मुख ही विनय और करूण स्वर में बोलने वाले कवि हैं औरों के आगे वे हमेंशा सर उॅचा रखते हैं। वे आत्म त्याग करने वाले को सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति मानते हैं। क्यों कि उन्हें न नरक में जाने का डर है और न ही मन में स्वर्ग जाने का कोई लालच। वे चौपाई के माध्यम से हमारे ज्ञान के केन्द्र वेद, पुराणों में जन्म भूमि की चर्चा को व्यक्त करते हैं–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, August 2025
Impact Factor: 7.67

" जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेद पुरान विदित जग जाना।

अवध सरिस प्रिय मोंहि न सोउ। यह प्रसंग जानै कोउ कोउ।।

तुलसीदास के राम का जन्मभूमि एवं निर्धन और परित्यक्तजनों के प्रति प्रेम अपार है और वह आकस्मिक नहीं है। स्वयं उनके हृदय में प्रेम प्रमोद–प्रवाह उमगा था वही राम में साकार हो गया है उन्होंने कहा भी था जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।। इस प्रकार तुलसीदास का साहित्य लोक–संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा से उदभूत है उनकी कृति रामचरित मानस संम्पूर्ण लोक में ज्ञान और परम्परा का आलोक विखेर रही है जिसका घर घर में पठन पाठन होता है जिसे भारतीय ज्ञान और परम्परा की धरोहर कहा जा सकता है।

संदर्भ–

1. परम्परा का मूल्यांकन– पृष्ठ 90–95, डॉ. रामविलास शर्मा
2. गोस्वामी तुलसीदास–पृष्ठ–23, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
3. रामचरित् मानस– गोस्वामी तुलसीदास –अयोध्याकाण्ड, सुंदर काण्ड, उत्तर काण्ड
4.भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–पृष्ठ–02 डॉ. संजय कुमार
5.भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा– संपादक डॉ. देवकी सिरोला
6.गोस्वामी तुलसीदास– शिवनंदन सहाय